दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL3**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): अक्षय नेमवाल

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 13/08/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	3	0	9	2	2	6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

*परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।*

*प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।*

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

अच्छा प्रयास

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 137½ टिप्पणी (Remarks): और अध्ययन अपेक्षित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) खड़ी बोली के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका

खड़ी बोली के विकास में अनेक कारणों ने अहम भूमिका निभाई जैसे

- आधुनिकता का आगमन
- राजनीतिक परिवर्तन
- ईसाई मिशनरियों
- धर्म सुधारक आदि

इन सभी कारणों में ईसाई मिशनरियों का योगदान अहम है। उन्होंने उस समय प्रचलित ~~भाषा~~ ब्रज भाषा की बजाय खड़ी ~~बोली~~ बोली को अपने प्रचार-प्रसार का माध्यम बनाया।

पाश्चात्य ने 'हिन्दी' को सर्वाधिक प्रचलित भाषा माना

बाइबिल का हिन्दी में अनुवाद किया तथा उसका मुफ्त वितरण कराया।

बाइबिल की रोचक कहानियों और महत्वपूर्ण पदों को भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

~~अपनी~~ प्रचार -प्रसार में ~~शामिल~~ शामिल कर उन्हें हिन्दी में छपवाया।

ईसाई मिशनरियों के बढ़ते प्रभाव से हिन्दू धर्म सुधारकों ने खड़ी बोली का सहारा ले कर अपने धर्म को बचाने का आन्दोलन प्रारंभ किया।

~~कुल मी~~ कुलमिलाकर हिन्दी खड़ी बोली के विकास में ईसाई मिशनरियों ने अहम भूमिका निभाई

5½
10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सुझाव

देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' ने अनेक प्रयास किये।

सबसे अहम कार्य, नागरी लिपि सुधार समिति का गठन है। समिति ने व्यक्तिगत स्तर पर चल रहे प्रयोग प्रयासों को संस्थान बद्ध तरीके से आकलन किया।

'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' ने श्याम सुन्दर दास और गोरखनाथ द्वारा दिये गये सुझाव को स्वीकृत कर दिया।

श्याम सुन्दर दास का सुझाव अ-मात्रा को वर्ण से हटा कर लगाया जाए

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के महत्वपूर्ण सुझाव जो सभी व्यक्तिगत प्रयासों के आधार पर दिया गया है।

1) भाषा का यथावत प्रयोग चलता रहे।

2) शीरोरेखा का प्रयोग बरकरार रहे।

3) अपने वर्गों के वर्णों के लिए अनुस्वार का प्रयोग। बाकी वर्णों में अनुस्वार का प्रयोग न किया जाय

जैसे : सम्बन्ध > संबंध
अन्याय > अन्याय

2/10

अध्ययन अपेक्षित

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) खड़ी बोली आंदोलन और अयोध्या प्रसाद खत्री

खड़ी बोली आंदोलन द्विवेदी युग में हुआ था। द्विवेदी जी ने अपनी पत्रिका 'सरस्वती' में खड़ी बोली को पद्य और गद्य दोनों में स्थान प्रदान कराने का कार्य किया।

अन्य कवियों में अयोध्या प्रसाद खत्री, अयोध्या सिंह हरिऔध महत्वपूर्ण हैं।

इन्होंने शुरुआत में ब्रज भाषा में काव्य रचा किन्तु बाद में दोनों खड़ी बोली को काव्य भाषा का दर्जा दिलाने में जुट गये।

अयोध्या प्रसाद ने अनेक कविताओं की रचना खड़ी बोली में की।

खत्री जी ने 'हिन्दी व्याकरण' 'खड़ी बोली का पद्य' आदि पुस्तकों की रचना की।

अन्य खड़ी बोली कवियों की कविता को भी छापा।

4/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रश्न 1

ब्रज भाषा के समर्थक प्रताप नारायण मिश्र के साथ खत्री जी का तीखा विवाद रहा।

तमाम विरोधों के बावजूद खत्री जी हिन्दी खड़ी बोली को पद्य एवं गद्य दोनों में स्थापित करने के लिए संघर्षरत रहे

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपि: अंतर्संबंध

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~ब्राह्म~~ ब्राह्मी लिपि

- उत्तरी ~~लिपि~~ शैली
  - गुप्त लिपि
    - कुटिल लिपि
      - शारदा लिपि
      - नागरी लिपि
- शैली दक्षिणी लिपि
  - द्रविड़ परिवार

ब्राह्मी चौथी से दो तरह की ओर लिखी जाती थी

अक्षर सामान्यतः सीधे होते थे

ब्राह्मी लिपि को प्रायः भारत की सभी लिपियों की जननी माना जाता है।

ब्राह्मी लिपि की प्रायः दो शैलियों का विकास हुआ। ये उत्तरी शैली और दक्षिणी शैली कहलाई। दक्षिणी शैली के अंतर्गत द्रविड़ परिवार की तमिल, मलयालम आदि लिपि लिपियाँ आती हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उत्तरी शैली में गुप्त काल में जो लिपि सामने आई, वह गुप्त लिपि के नाम से जानी गई।

गुप्त लिपि का प्रयोग जनसमुदाय में होने लगा। प्रयोग की इस प्रक्रिया में वर्णों के चिन्ह नीचे से घुमने लगे। गुप्त लिपि का यह नया रूप कुटिल लिपि कहलाया।

कुटिल लिपि से जो लिपि का नया स्वरूप कश्मीर के पंडितों ने प्रयोग किया, वह शारदा लिपि कहलाया।

और अन्य स्वरूप जो उत्तरी भारत में प्रचलन में आया, वह नागरी लिपि कहलाया।

कुलमिलाकर नागरी लिपि को हम ब्राह्मी लिपि का आधुनिक रूप कह सकते है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में आर्य समाज का योगदान

उन्नीसवी ~~सताब्दी~~ शताब्दी में जिन कारणों से हिन्दी का विकास हुआ, उनमें एक समाज सुधार आन्दोलन भी था।

समाज सुधार आन्दोलनों, जैसे ब्रह्म समाज, आर्य समाज आदि ने हिन्दी के विकास में अतुलनीय योगदान दिया।

आर्य समाज के प्रवर्तक दयानन्द सरस्वती ने अपने संस्थान में हिन्दी की स्थिति सुदृढ़ की। उन्होंने समाज के नियमों में हिन्दी ~~सिखना~~ सीखना अनिवार्य कर दिया।

~~समाज~~ केशव चन्द्र सेन की प्रेरणा से दयानन्द सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हिन्दी में की।

लगभग पचास पत्र विभिन्न स्थानों से प्रकाशित होते थे।

उन्नीसवी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चूंकि समाज का नियम था कि सभी लोग हिन्दी सीखें।

अतः समाज के कार्य, प्रचार-प्रसार, पुस्तकें आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिला।

हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन होता था।

स्पष्टतः आर्य समाज ने अपने स्तर पर हिन्दी की स्थिति को सुदृढ़ बनाने के अनेक कार्य किये।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) राजभाषा हिन्दी के विकास के संदर्भ में त्रिभाषा-सूत्र की परिकल्पना के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजभाषा हिन्दी के विकास का दायित्व केन्द्र सरकार का है। संविधान के अनुच्छेद 350 के तहत केन्द्र सरकार का कर्तव्य है कि वह हिन्दी भाषा के प्रचार विकास में कार्य करें।

इस दिशा में त्रिभाषा सूत्र की चर्चा स्वतंत्रता के बाद से हो रही है। अनेक महान भाषाविदों और नेताओं का मानना है कि त्रिभाषा सूत्र ही हिन्दी और अन्य भाषाओं के समन्वित विकास करने में सहायक हो सकता है।

त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत भारत के ~~सभी विद्यार्थियों~~ छात्रों को तीन भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पहली भाषा उनकी मात्र भाषा होगी। प्राथमिक शिक्षा का ज्ञान छात्रों को अपनी मातृभाषा ~~मात्र भाषा~~ में ही देना चाहिए।

दूसरी भाषा हिन्दी भाषी क्षेत्र के लिए अहिन्दी भाषा होगी जो कि दक्षिण या उत्तर पूर्व की होगी। और अहिन्दी छात्रों के लिए हिन्दी होगी।

तीसरी भाषा अंग्रेजी होगी। जिसका प्रारंभ माध्यमिक स्तर से होगा।

त्रिभाषा सूत्र का दृढ इच्छाशक्ति से पालन करने पर एक पीढ़ी के बाद देश में सभी युव नवयुवकों को हिन्दी का ज्ञान होगा।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देश में राजभाषा बोलने वालों की संख्या में वृद्धि होगी।

त्रिभाषा से दक्षिण के लोगों की चिन्ता भी दूर होगी क्योंकि उनकी भाषा का भी प्रचार-प्रसार होगा।

देश की सम्पर्क भाषा का स्तर उठ जाएगा और देश में व्यापार, पर्यटन आदि में भारतीय नागरिकों को सुविधा होगी।

12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा के लिए प्रयुक्त होने वाली लिपि देवनागरी लिपि कहलाती है। देवनागरी लिपि का स्रोत ब्राह्मी लिपि को माना गया है।

देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव

ध्वनि सम्बंधी सुझाव

1) देवनागरी लिपि को सरल बनाने और मानकीकरण में ऐसे ध्वनि चिन्हों को हटा देना चाहिए जो अब प्रयोग में नहीं होते
जैसे ऌ, ष, ॠ

2) फारसी ध्वनियों के समावेश के लिए नुक्ते का प्रयोग चल पड़ा है जो ठीक भी है। इसे अपनाने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में कोई बुराई नहीं है।

क, ग, फ़

3) 'ख' व 'रव' में भ्रम हो सकता है
अतः 'ख' को सटा कर लिखें।

4) ऑ का प्रयोग अंग्रेजी के ध्वनियों
के लिए होने लगा है। इसे
अपनाने में कोई बुराई नहीं
जैसे: डॉक्टर

5) लिपि के सुधार हेतु संशोधन
करते रहना चाहिए

6) 'म' 'भ' मे भ्रम होता है अतः
गुजराती गुडी का प्रयोग करना
चाहिए।

7) आधुनिक दौर में सभी कार्य
कम्प्यूटर में होते हैं। अतः एक
मानकीकृत कॉट तैयार करना
चाहिए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6) टायप की समस्या कम करने और लिपि को सरल बनाने हेतु संयुक्ताक्षरों को हटाया जा सकता है।

क्ष, त्र, ज्ञ

7) र की रेफ में भ्रम होता है कहीं पर /, c, ˆ का प्रयोग होता है इन्हें हटा कर किसी एक के प्रचलन को मान्यता प्रदान की जा सकती है

8) अनुस्वार और अनुनासिकता का प्रयोग चलन में आ गया है अपने वर्ग के वर्णों के लिए अनुस्वार का प्रयोग ठीक है जैसे सम्बन्ध > संबंध

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) "हिन्दी भाषा एवं लिपि के विकास में 'नागरी प्रचारिणी सभा' का ऐतिहासिक महत्त्व है।" इस कथन पर विचार कीजिये। 15

हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि के विकास में नागरी प्रचारिणी सभा ने ऐतिहासिक योगदान दिया।

मदन मोहन मालवीय, पर्शोतम दास टंडन, ~~महात्मा~~ महात्मा गांधी जैसे अनेक विद्वान सभा से जुड़े थे और उन्होंने व्यक्तिगत स्तर पर और नागरी प्रचारिणी सभा के साथ मिल कर हिन्दी के विकास में अनेक कार्य किए।

प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन से नागरी प्रचारिणी सभा का जन्म हुआ।

काशी में स्थित सभा ने भाषा के प्रचार का दायित्व बखूबी निभाया। अन्य सभाओं के साथ मिल कर

1893 ई० में काशी में श्यामसुंदर दास, रामनारायण मिश्र, ठाकुर शिवकुमार सिंह ने स्थापना की।

'सरस्वती' पत्रिका को प्रारंभ किया।

शोध पत्रिका 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' का लगातार प्रकाशन

पं० कामताप्रसाद गुरु एवं किशोरीदास वाजपेयी निर्मित व्याकरण का प्रकाशन किया।

हिन्दी शब्द सागर, हिन्दी विश्व कोश, 'वैज्ञानिक शब्दावली' आदि का प्रकाशन किया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी को देश की राष्ट्रभाषा और सम्पर्क भाषा बनाने के कार्य को अंजाम दिया।

काका कालेकर के संरक्षण में नागरी ~~प्रचारिणी~~ प्रचारिणी सभा ने लिपि सुधार का कार्य किया।

→ सभा ने सावरकर बन्धुओं द्वारा ~~स~~ बताई गई 'अ' की बारहखड़ी का समर्थन किया।

→ शिरोरेखा के प्रयोग पर बल दिया

कालेलकर

5
1½

इंकम की शिक्षा, छात्रवृत्ति, ~~पुर~~ पुरस्कार आदि द्वारा हिन्दी लेखन को बढ़ावा दिया।

पुराने ग्रंथों का लेखन किया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में निम्नलिखित व्यक्तियों के योगदान पर प्रकाश डालिये:

(i) महात्मा गांधी 20
(ii) बाल गंगाधर तिलक 10
(iii) मदनमोहन मालवीय 10
(iv) सेठ गोविन्द दास 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1) महात्मा गांधी

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गांधी का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने घोषित तौर पर हिन्दी को राष्ट्रभाषा माना। उनका मानना था कि हिन्दी के माध्यम से जनता को एक सूत्र में बांधा जा सकता है।

गांधी जी की प्रेरणा से हिन्दी प्रचारिणी सभा वर्धा और बाद दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा का निर्माण हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गांधी जी द्वारा दिये महत्व का परिणाम था कि ~~ल~~ तमिल के नागरिकों ने गांधी जी से प्रचारक भेजने की मांग भी की थी।

गांधी के पुत्र देवदास में तमिलनाडु में ~~प्रथम~~ प्रचारक के रूप में गये थे।

कांग्रेस के इन्दौर अधिवेशन में गांधी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में कांग्रेस के पटल पर रखा। कांग्रेस के कार्यों को हिन्दी में क्रियान्वयन करने को प्रेरित किया।

गांधी जी साहित्य सम्मेलन से भी जुड़े रहे। नागरी प्रचारिणी सभा में भी अपना योगदान दिया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1936 में गांधी के सभापतित्व में काका कालेकर के साथ नागरी लिपि सुधार समिति का गठन किया गया। उन्होंने भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ लिपि के मानकीकरण में भी योगदान दिया। इसलिए डॉ रामविलास शर्मा को कहना पड़ा कि " अकेले गांधी जी ने दक्षिण क्षेत्र में हिन्दी का जितना विकास किया, उतना तो संस्थागत सभाओं से भी न हो पाया "।

12/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बाल गंगाधर तिलक

बाल गंगाधर तिलक महाराष्ट्र के रहने वाले थे। ~~तब~~ किन्तु उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी के महत्व को पहचान कर, खुले मुख से हिन्दी का समर्थन किया।

तिलक हिन्दी को राष्ट्रभाषा। और देवनागरी को राष्ट्रलिपि मानते थे। लिपि सुधार के अंतर्गत प्रयासों में तिलक का नाम सर्वप्रथम आता है।

उन्होंने "हिन्दी केसरी" नामक पत्र का सम्पादन हिन्दी में किया। ~~उन्होंने~~ अपने पत्र के लिए ~~e~~ उन्होंने हिन्दी के वर्णों को काट-छांटकर 190 टाईप का एक फॉन्ट तैयार किया जो तिलक फॉन्ट कहलाया।

केसरी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

चूंकि तिलक गरम दल के प्रमुख नेता थे। देश में उनके मानने वाले और उनके एक आदेश पर मर मिटने वाले बहुत थे।

उनके द्वारा हिन्दी का समर्थन महाराष्ट्र में क्रांति लेकर आया। उनके शिष्यों में सावरकर बन्धुओं का स्मरण हिन्दी में सदैव किया जाएगा। उन्होंने 'अ' की बारहखड़ी सुझाई थी।

आज भी हिन्दी का स्तर महाराष्ट्र में काफी अच्छा है। मुक्तिबोध जैसे महान कवि महाराष्ट्र की ही देन है।

इन सब के पीछे कहीं न कहीं तिलक के कार्य अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

6/10

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मदनमोहन मालवीय

हिन्दू महासभा से जुड़े मदनमोहन मालवीय ने हिन्दी के विकास में अनेक कार्य किये।

हिन्द मालवीय जी 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के संस्थापकों में से एक हैं।

इन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा में भी अपना अहम योगदान दिया।

मालवीय जी ने गांधी जी को साहित्य सम्मेलन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया था। गांधी जी के हिन्दी विकास सम्बंधी कार्यों का मूल्यांकन करने पर मालवीय जी का यह कार्य सबसे अहम

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिखाई देने लगता है।

बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय की स्थापना कर हिन्दी के संस्थागत प्रयासों को तीव्रता प्रदान की। यहाँ सभी छात्रों को हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य था।

विश्वविद्यालय से हिन्दी पढ़ने वालों की संख्या और साहित्य में वृद्धि हुई।

इसके अलावा उन्होंने पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन कर हिन्दी के विकास को और बढ़ाया।
इनके प्रमुख पत्रों में से एक 'अभ्युदय' है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सेठ गोविन्द दास

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सेठ गोविन्द दास की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता।

सेठ गोविन्द दास वह पहले सदस्य थे, जिन्होंने स्टेट कॉउंसिल में हिन्दी के प्रयोग की बात उठाई।

इनके द्वारा शुरू किये गये आन्दोलनों का परिणाम हुआ कि कॉउंसिल के अन्य सदस्य भी हिन्दी के समर्थन में खड़े हुए।

परिणाम यह भी हुआ कि हिन्दी का प्रयोग स्टेट काउंसिल में चालू हो गया।

'शारदा', 'लोकमत', 'जयहिन्द' आदि पत्र हिंदी में प्रारंभ किए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तत्पश्चात् इन्होंने हिन्दी को अन्य सरकारी ~~उत्के~~ कार्यलयों, न्यायिक परिषदों में प्रयोग पर बल दिया।

सेठ गोविन्द दास के प्रयास से हिन्दी को समृद्ध भाषा के रूप में ~~स्विकृति~~ स्वीकृति मिली। सरकारी कार्यलयों, विधान मण्डलों और अन्य कार्यों जहाँ ~~अंग्रे~~ अंग्रेज़ी का बोलबाला था, वहाँ धीरे-धीरे हिन्दी ने अपनी जगह बनाई। आज इस राज्य में सारा कार्य हिन्दी में हो रहा है और इसमें पहला कदम उठाने वाले सेठ गोविन्द दास का हिन्दी को यह अनुदान सदैव याद किया जायेगा।

संसद में प्रार्थी विधेय के विरुद्ध जाकर हिन्दी के पक्ष में मतदान किया

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) प्रताप नारायण मिश्र

भारतेन्दु मण्डल के अत्यन्त विनोदी और ज़िन्दादिल कवि-लेखक प्रताप नारायण मिश्र ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

गद्य क्षेत्र में भावना प्रधान निबन्ध लेखन की वजह से इन्हें पाश्चात्य भावना प्रधान हिन्दी निबन्ध लेखक स्टील के सादृश्य में हिन्दी का स्टील कहा जाता है।

प्रमुख निबन्ध: जुआरी-खुआरी, पंच परमेश्वर, बुढ़ापा, गौसंकट

मिश्र जी ने गद्य की तुलना में पद्य की रचना अधिक की है। काव्य क्षेत्र में उन्होंने अनेक विषयों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को अपने काव्य में स्थान दिया।
लावनीबाजों के साथ बैठकर उन्होंने
अनेक लावनी की रचना की।
समस्यापूर्ति में वे अग्रणी थे।
काव्य गोष्ठियों में भाग लेना और
कविताओं को गा कर सुनाना
उन्हे पसंद था।
उनके हास्य व्यंग्य के कारण
वे बहुत प्रसिद्ध थे उनकी कविताओं
में भी हास्य व्यंग्य के भरपूर
प्रसंग मिल जाते हैं।
काव्य संग्रह :- प्रताप लहरे, मन
की लहर, लोकोक्तिशतक आदि।
मिश्र जी ने 'ब्राह्मण' नामक
पत्र का संचालन भी किया।
स्पष्टतः मिश्र जी का योगदान हिन्दी
साहित्य में 'मील का पत्थर' माना जाता है

6 1/2 / 10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) कविवचन सुधा

युग प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा सम्पादित पत्र 'कविवचन सुधा' काफी प्रचलित था।

भारतेन्दु ने अपने पत्र कि माध्यम से अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन छेड़ दिया था।

राष्ट्रीय प्रेम और नवजागरण से ओत-प्रोत लेखन कविवचन सुधा की विशेषता थी।

अपनी क्रान्तिकारी प्रवृत्ति के कारण कविवचन सुधा को अंग्रेजी सरकार ने बंद (बन्द) करा दिया था। यह बात 'भारतेन्दु ने 'भारत-दुर्दशा' में व्यक्त की है।

प्रकाशन वर्ष / अवतार

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कविवचन सुधा के बाद, भारतेन्दु ने ~~बालाबो~~ अन्य पत्रों का सम्पादन किया।। इनमे प्रमुख है बालाबोधिनी, हरिचन्द्र मैगजीन, और हरिचन्द्र चंद्रिका।।

पत्र-पात्रिकाओं के अलावा उन्होंने अपना कार्य गद्य और पद्य के माध्यम से जनसमुदाय तक पहुँचाया।

इनके नाटकों का महत्व अन्य रचनाओं की तुलना में अधिक है।

प्रमुख नाटक : भारत दुर्दशा
- अन्धेर नगरी
- नील देवी

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा

प्रेमचन्द पश्चात् युग में हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधार काफी चर्चा में रही है।

सिगमंड ~~प्र~~ फ्रॉयड के सिद्धांत मनोविश्लेषणवाद का इस उपन्यास धारा पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा है।

हिन्दी साहित्य में जैनेन्द्र को हिन्दी साहित्य में ~~व~~ मनोवैज्ञानिक उपन्यास धारा का प्रवर्तक माना जाता है। जैनेन्द्र के महत्वपूर्ण उपन्यास हैं: परख, त्यागपत्र, सुनीता और कल्याणी।

इस धारा के अन्य लेखकों में इलाचन्द्र ~~जोशी~~ जोशी का नाम आता है। इनका मनोवैज्ञानिक उपन्यास है: संन्यासी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय ने भी ~~मनोवि~~ मनोवैज्ञानिक उपन्यास लिखे : जैसे
1) शेखर : एक जीवनी है।
2) नदी के द्वीप

मनोवैज्ञानिक धारा में कथानक टूटा हुआ होता है क्योंकि इसमें मनुष्य के अन्तर्मन का सूक्ष्म चिंतन किया जाता है

पात्रों की संख्या सीमित होती है तथा सभी पात्रों में मनोवैज्ञानिक चिंतन दर्शाया जाता है

चरित्र इसमें समाज से कम स्वयं से ज्यादा लड़ाई करता है

स्पष्टत: मनोवैज्ञानिक उपन्यास धारा एक क्रांतिकारी धारा है जिसने हिन्दी साहित्य को एक नयी दिशा प्रदान की।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

रीतिबद्ध काव्यधारा या लक्षण ग्रंथ काव्य धारा के प्रमुख कवि केशवदास अपनी काव्यगत कठिनाई की वजह से कठिन काव्य के प्रेत ~~के~~ नाम ~~से~~ से जाने जाते हैं।

अज्ञेय के शब्दों में केशव संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। केशव अपने बहुआयामी चरित्र को अपनी रचनाओं ~~क~~ में समाविष्ट करना चाहते थे यही कारण है ~~कि~~ ~~की~~ उनके काव्य में कठिन पदों की ~~समाविष्टी~~ समाविष्टि हुई।

केशव ~~अपन~~ प. अपने इतिहासकार व्यक्तित्व को 'जहांगीरजस चंद्रिका' में व्यक्त करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अपने आचार्यत्व को 'कविप्रिया' और 'रसिक प्रिया' में व्यक्त करते हैं अपने भक्ति भाव को 'रामचन्द्रिका' में।

यही बहुआयामी चरित्र उनकी काव्यगत कठिनाईयों का कारण बना। इसके अलावा संवाद योजना में केशव का कोई सानी नहीं (शुक्ल)

इन्होंने छन्दों के प्रयोग में अपनी मौलिकता दर्शायी है तथा अन्योक्ति अलंकार का प्रथम ~~स्वतंत्र~~ प्रयोग का श्रेय इन्हें जाता है

'रामचन्द्रिका' की संवाद योजना विलक्षण है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ङ) पद्माकर का शृंगार-वर्णन

रीतिसिद्ध परंपरा के अन्य प्रमुख कवि पद्माकर हैं। इन्होंने भी अनेक लक्षण ग्रंथों की रचना की।

प्रमुख रचना : जगदविनोद, पद्माभरण

जगदविनोद में इन्होंने अपने काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों की समाविष्टि की है। इसके केन्द्र में शृंगार रस है। कविता के अन्य सभी तत्वों का प्रयोग शृंगार रस की सिद्धता साबित करने के लिए की है।

शुक्ल ने जगदविनोद को शृंगार रस का सारग्रंथ कहा है।

पद्माकर ने शृंगार के संयोग और वियोग दोनो पक्षों का गहन चित्रण किया है।

प्रकृति एवं सौंदर्य का भी अंकन इनके काव्य में है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

लक्षण सम्बंधी सिद्धांतो में दोहों का प्रयोग और उदाहरण में कवित्त छन्द तथा सवैया छन्द का प्रयोग किया।

शृंगार रस सम्बंधी काव्य शास्त्रीय पक्षों में पद्माकर की भूमिका अहम है।

पद्माभरण में उन्होंने अपनी अलंकार सम्बंधी धारणाओं को रखा है।

उम्र के अंतिम पड़ाव में उनका रुझान भक्ति की ओर हुआ। अपना शृंगार वर्णन उन्होंने कृष्ण भक्ति में गाया।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) हिन्दी की सतसई परंपरा का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसमें बिहारी सतसई का स्थान निर्धारित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संख्यामूलक नामांकरण की परम्परा हिन्दी में पहले से चली आ रही थी।

जैसे बेताल पच्चीसी, सिंहासन बत्तीसी और हनुमान चालीसा।

इसी परम्परा में एक ~~लम्बी~~ लम्बी रचना सतसई कहलाती है।

संस्कृत शब्द 'सप्तसती' का तद्भव रूप 'सतसई' कहलाया।

हिन्दी में सतसई परम्परा का श्रेय 'तुलसी सतसई' के महान कवि तुलसी दास को जाता है।

रहीम अन्य रहिम सतसई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी परम्परा को आगे ~~बढ़ाते~~ बढ़ाते हुए बिहारी ने 'बिहारी सतसई' की रचना की। जिसमें 713 दोहे हैं

मुक्तक काव्य की रचना

'बिहारी सतसई' बिहारी की अक्षय कीर्ति का स्रोत है।

अन्य सतसई की तुलना में यह दो सन्दर्भों में उनके आगे है।

पहला विषय वैविध्य। बिहारी ने बहुत सारे विषय को एक साथ समाया है जबकि रहीम सतसई में सिर्फ भक्ति और नीति को जगह मिल पाई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी ने काव्यशास्त्रीय तत्वों के प्रयोग में सबको पीछे छोड़ दिया। बिहारी सतसई में अलंकार का चमत्कार, रस, गुण, वक्रोक्ति आदि अनेक काव्यशास्त्रीय गुण मिल जाते है

परिणाम यह हुआ कि आज 'बिहरी सतसई' एक रूढ़ शब्द हो गया है सतसई को लोग बिहारी सतसई के सादृश्य में ही देखते है

इसकी तारीफ में किसी कवि ने कहा है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सतसई के दोहरे, ज्यों नाविक के तीर
देखन में छोटे लागें, घाव करे गम्भीर'।

इसके अलावा जॉर्ज ग्रियर्सन ने भी बिहारी की तारीफ में कहा है कि बिहारी जैसा कवि पूरे यूरोप में नहीं'

स्पष्टतः 'बिहारी सतसई' हिन्दी की सतसई परंपरा में सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त करती है।

12/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "उपन्यासकार जैनेन्द्र ने हिन्दी उपन्यास को नया शिल्प दिया।" इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपन्यासकार जैनेन्द्र हिन्दी उपन्यास धारा में ~~मनो~~ मनोवैज्ञानिक उपन्यास धारा के प्रवर्तक माने जाते हैं।

जैनेन्द्र ने हिन्दी उपन्यास की परम्परा में एक अलग धारा आरम्भ की, जिसका अनुकरण ईलाचन्द्र जोशी और अज्ञेय जैसे लेखकों ने ~~की~~ किया।

उपन्यास को नया शिल्प देने से तात्पर्य है उनके द्वारा इस उपन्यास धारा के सिद्धान्तों को निर्धारित करना।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शिल्प के स्तर पर यह धारा पहले के उपन्यास से भिन्न है। इसमें पारम्परिक नायक नहीं होता और इसके केन्द्रीय चरित्र समाज से लड़ने की बजाय खुद से ज्यादा लड़ते हैं।

परख की कट्टो जो एक विधवा है। उसके मनः स्थिति का सूक्ष्म चित्रण जैनेन्द्र ने यहाँ किया है।

इनमें पात्रों की संख्या भी बहुत सीमित होती है। उदाहरण के तौर पर, त्यागपत्र में तीन ही चरित्र हैं मृणाल, श्रीनिवास और उसका मित्र।

कथानक की सुसम्बद्ध एवं अंत पारंपरिक उपन्यासों से भिन्न है।

भाषा प्रतीकात्मक हो जाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कथानक लगभग दूर होता है। इसमें प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण का भी सीमित वर्णन होता है।

जैनेन्द्र की प्रमुख रचनाएं

- परख
- कल्याणी
- त्यागपत्र
- सुनीता

स्पष्टतः जैनेन्द्र ने हिन्दी उपन्यास को नया शिल्प दिया।

8/17

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भक्तिकालीन कृष्णभक्तिधारा के कवि नंददास की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृष्णभक्ति काव्यधारा के प्रमुख कवियों में नंददास का नाम शामिल है।

नन्ददास अष्टछाप के कवियों में से एक हैं इन्होंने कृष्ण और राधा की आराधना में अपना काव्य रचा।

नन्ददास ने काव्य के लिए ब्रज भाषा का चयन किया।

कृष्ण और गोपियों के प्रेम के में संयोग रस और वियोग रस दोनों का नन्ददास ने वर्णन किया है।

काव्य में अलंकार का प्रयोग दृष्टव्य है। अर्थालंकार का प्रयोग शब्दालंकार की तुलना में अधिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के नन्ददास ने काव्यशास्त्री
ग्रंथ की रचना भी की।
जिसे लक्षण ग्रंथ व परम्परा
की सांकेतिक शुरुआत भी
माना जा सकता है।

अपनी काव्यगत विशेषताओं
को लक्षण ग्रंथ में समाविष्ट कर
वे अपने कवि स्वरूप के साथ
आचार्यत्व को जमा लेना चाहते
थे।

8/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation